Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 2, Issue 6, pp 299-304, June 2025

वैश्वीकृत हिंदी कविता में नारी चित्रण

रीना रंगा [1], डॉ. अजय कुमार शुक्ला [2]

[1] छात्रा, क लंगा वश्व वद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

[2] प्रोफेसर (हिंदी), क लंगा वश्व वद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

[1]ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

सारांश

वैश्वीकरण के आगमन ने साहित्यिक अभिव्यक्तियों को गहराई से प्रभावित किया है, और हिंदी कविता भी इससे अछूती नहीं रही। यह अध्ययन वैश्वीकरणकालीन हिंदी कविता में महिलाओं के चित्रण की बदलती प्रवृत्तियों की पड़ताल करता है, जिसमें समकालीन कवि पहचान, सशक्तिकरण, प्रतिरोध और सांस्कृतिक संलयन जैसे विषयों के माध्यम से महिलाओं को प्रस्तुत करते हैं। परंपरागत चित्रण — जहाँ महिलाएं त्याग, भक्ति और घरेलू जीवन की प्रतीक थीं — अब एक जटिल रूप ले चुका है, जिसमें वे आत्मनिर्भर, स्वायत्त और बहुआयामी स्वरूप में उभरती हैं। यह शोध उन आधुनिक हिंदी कवियों के चयनित काव्य-रचनाओं का विश्लेषण करता है, जो वैश्विक नारीवादी विमर्श, शहरी अनुभव, प्रवासी चिंताओं और सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ से जुड़ी संवेदनाओं को स्वर देते हैं। कविता में प्रयुक्त भाषाई नवाचार, बिंबविधान और कथन-शैली के माध्यम से महिलाओं की प्रस्तुति को विश्लेषित करते हुए, यह अध्ययन यह रेखांकित करता है कि वैश्वीकरण के युग में हिंदी कविता सांस्कृतिक संवाद और परिवर्तन का सशक्त माध्यम बन गई है। यह शोध उत्तर-उदारीकरण भारतीय साहित्य में लैंगिक विमर्श को बेहतर समझने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण योगदान देता है, और कविता को सामाजिक टिप्पणी तथा नारीवादी अभिव्यक्ति के सशक्त मंच के रूप में प्रस्तुत करता है।

शोध आलेख

वैश्वीकरण के युग में नारी स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ी है। इसका मुख्य कारण बाज़ारवादी कंपनियों में नारी की माँग बढ़ी है। यह सामाजिक एवं आर्थिक रूप से नारी की समानता को बढ़ाने वाला संकेत है। आज की नारी यह चाहती है कि एक ऐसा समाज हो जहाँ बिना किसी लिङ्गीय भेदभाव तथा समान वेतन के काम कर सके। उसके किए गए कार्यों का उचित मूल्यांकन भी हो। वैसे देखा जाए तो आज के युग में स्त्री ने फिल्म, मीडिया और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में अपनी अलग पहचान बनाई है। बाज़ारवादी तथा उपभोक्तावादी दृष्टि ने उसकी अर्थसत्ता को मजबूत करने का कार्य किया है। वैश्वीकरण ने उसे विस्थापन की दुनिया में धकेल कर उसके शरीर पर कब्ज़ा भी कर लिया है। वह घर की चहारदीवारी से निकलकर वैश्वीकरण के जाल में कैद होती दिखाई पड़ती है । वर्तमान युग में भी नारी की छवि को एक नए रूप में चित्रित किया गया है, जो भोगवादी संस्कृति पर आधारित है। आज पूँजीवादी वर्ग अपना उत्पाद बेचने के लिए विज्ञापनों में नारी की भोगवादी, बिकाऊ एवं नग्नछवि को उभारा है। यह वस्तु को प्रचारित प्रसारित करने का केवल एक माध्यम बनकर रह गई है।

वैश्वीकरण ने आदमी के जीवन के सभी आयामों को प्रभावित किया है। इससे नारी भी बच नहीं पाई है। आधुनिकता एवं नारी स्वतंत्रता के नाम पर आज नारी के साथ एक क्रूर मजाक किया जा रहा है। स्त्री बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं पूँजीवादी वर्ग के कुचक्र को साफ़-साफ़ समझती है,परंतु फिर भी वह उससे बच नहीं पा रही है। नारी के भौतिकतावादी दृष्टिकोण ने बड़े पैमाने पर उद्योगपतियों को फायदा पहुँचाया है। प्रभा खेतान ने वैश्वीकृत नारी के बारे में लिखा है- “मीडिया भी धन के लोग में अपने असली लोकतांत्रिक उद्देश्यों को भूलकर प्राप्त प्रतिमानों को स्थापित करने में लगा हुआ है और स्त्री एक असंभव सपने से ग्रस्त अपनी दैनिक छवि को काटती-छाँटती,माँजती,घिसती रहती है। वह स्वीकार लेती है कि उसकी आत्म छवि में निरंतर किसी न किसी प्रकार के सुधार की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में स्त्री मनुष्य के रूप में ही नहीं, बल्कि एक वस्तु के रूप में रह जाती है,जिसका सौंदर्य बाज़ार प्रतिमानों के अनुरूप काटा और छाँटा और उघाड़ा जा रहा है ।” 1

बाज़ारवादी दृष्टिकोण ने प्रत्येक युग में नारी का मानसिक एवं शारीरिक शोषण किया है। नारी श्रम को सस्ता माना जाता है। उसे उत्पाद बनाने एवं उत्पाद बेचने के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। समकालीन हिंदी कविता में स्त्री के इस वैश्विक रूप का विवेचन सूक्ष्म रूप से किया गया है। वैश्वीकरण की प्रवृत्ति ने नारी को आधुनिक बनाने में अपनी विशेष भूमिका निभाई है। वह सोचती है कि आधुनिक भाषा, पहनावा,खान-पान उसे पितृसत्ता के साथ-साथ शोषण से मुक्ति दे देगा। उसे परंपरागत मूल्यों से मुक्ति दे देगा,यह उसकी भूल है। वह उसे इससे मुक्त तो करता है, परंतु बाज़ारवादी शोषणवृत्ति में धकेल देता है। जो पूँजीपति वर्ग की लूट धारणा का शिकार होकर रह जाती है। ममता कालिया की कविता वैश्विक नारी का चित्रण इस प्रकार करती हैं-

"अब और नहीं सहेगी

खाँटी घरेलू औरत,

पिछली पांत में खड़ी रहेगी

जाएगी सिविल लाइंस,

कटवा देगी यह लंबी काली चोटी

नुचवा देगी भवें

देह के सारे अवांछित बाल साफ़ कटवा देगी

ले आएगी वह रेपीडेक्स इंग्लिश रीडर

नहीं पहनेगी वह अब

मोटी हैंडलूम साड़ियाँ।" 2

वर्तमान समय में नारी-विमर्श का जो दौर चला है, वह नव पूँजीवादी नारी को भी दर्शाता है। इसमें नारी प्राचीन बंधनों से मुक्त होकर नवीन बंधनों में बँध गई है। वह अपनी मुक्ति की आकांक्षा में ज़ायज-नाज़ायज कार्यों को भी कर रही है। नारी ने 'अर्थ' की सत्ता पर कब्ज़ा करते हुए धन एवं पद लोलुपता को ही जीवन का ध्येय मान लिया है। वैश्विक ग्लैमरयुक्त स्त्री का अंकन नीलेश रघुवंशी की कविता में देखा जा सकता है-

"चमचमाती कार में रंगीन चश्मा हाथ में मोबाइल

लकदक कपड़ों में नाचती-गाती

खूबसूरत लड़कियाँ झाँसे में आकर,बनती है वो

सोचती भी नहीं जिनके बारे में दूर-दूर तक

काली सूची में दर्ज़ है नाम खूबसूरत लड़कियों के

भीतर लड़कियों के भी है एक सूची

बड़ी खूबसूरती से धकेला जिसने उन्हें, इस संसार में ।" 3

आज की स्त्री शहरीकरण से प्रभावित है। वह ऑफिस में जो काम कर रही है,उस पर समाज की निगाहें भी टिकी रहनी चाहिए। निर्मला पुतुल के अनुसार औद्योगीकरण एवं पूँजीवादी व्यवस्था ने नारी अस्मिता को लूटने का काम किया है। वे स्त्री की अस्मिता को पूँजीवाद से बचने का आह्वान सर्वसमाज से करती है-

"जानते हो महानगरों में पनपे

आया बनाने वाली फैक्ट्री का गणित

और घरेलू कामगार महिला संगठन का इतिहास?

बचाओ अपनी बहनों को।" 4

परिचय के कुत्सित मूल्य नारी की स्वतंत्रता के रूप में जानने लगे हैं,जो कि चिंता का विषय है। पूँजीपरक व्यवस्था में नारी ने जो अपने जीवन की नवीन अवधारणा समाज के सामने रखी है, वह एक माया जाल है। दैनिक जीवन की समस्याओं को दूर करने के लिए और महँगाई में अपना जीवन संचालित करने के लिए आज की नारी सरे बाज़ार अपनी अस्मिता बेचने को विवश है। कविता में स्त्री के

स्वरूप को लेकर समाज से एक लंबी बहस की है। कवि जब पूँजीवाद एवं बाज़ारवाद से उभरी समस्याओं को देखता है तो घृणा से भर उठता है। कुमार विमल ने स्त्री की नैतिकता को जब से दो कौड़ी में बिकते देखा तो है बेबाकी से लिखता है-

"दो जून की रोटियों के लिए अस्मत बेचती हुई

उघड़ी जाँघों वाली औरत से

नैतिकता का अर्थ पूछो।" 5

समकालीन कविता में स्त्री के प्रति संवेदना है, जो उसे अति आधुनिकता से बचाना चाहती है। खरीद-फरोख्त के युग में वस्तुएँ ही नहीं, स्त्रियाँ भी वस्तुओं से बदतर हालत में बिकने लगी हैं। बड़े शहरों में स्त्री के शरीर को लेकर बड़े-बड़े दलाल कंपनियाँ चला रहे हैं। स्वयं स्त्री को यह पता नहीं रहता कि उसका सौदा किसके साथ और कितने रुपए में हुआ है। विजय शंकर चतुर्वेदी ने स्त्री की इस दशा का जिम्मेदार वर्तमान परिस्थितियों को माना है । वे लिखते हैं -

"बिकना नहीं चाहती वह स्त्री भी

जो खड़ी रहती है खंबे के नीचे ग्राहक के इंतज़ार में

हमारी खरीफरोख्त में कोई नहीं पूछता हमारी मर्जी

कोई नहीं बताता कि कितने में हुआ सौदा हमारा किसके साथ।" 6

वैश्वीकरण की अवधारणा ने स्त्री को बाज़ार में चमकने और अपनी प्रतिभा उजागर करने का सुअवसर प्रदान किया है। बाज़ार ने सुंदर स्त्री के माध्यम से आदमी को प्रलोभन देकर अपनी और खींचा है। सौंदर्य को औद्योगिक वर्ग ने एक साधन बना लिया है। वह नारी मूल्यों के प्रति विश्वास न रखकर नारी सौंदर्य पर धन खर्च करता है, ताकि उसे विज्ञापन की प्रतिमूर्ति बनाकर धन कमाया जा सके। यह स्त्री व्यापार का एक नया साधन है। आज प्रत्येक वस्तु को बेचने के लिए स्त्री का सहारा लिया जा रहा है। उसके भीतर जो संवेदना, पीड़ा, प्रेम एवं आदर्श की भावना है, वह सब गौण हो गई है। भौतिक बंदिश ने स्त्री का चीर हरण कर लिया है। अनीता वर्मा ने वर्तमान स्त्री के प्रति चिंता को व्यक्त करते हुए लिखा है-

"अब बाज़ार स्त्री के कदमों में है

उसके केश सहलाता उतारता कपड़े

सामान कोई भी हो बेची जाती है हमेशा स्त्री

वह बाज़ार को ले आती है घर में

बच्चे से प्यार करती हुई वह खिलाती है उसे आधुनिक उत्पाद

एक दवा उसे कमर दर्द से बचाती है

वह कई घरों को इसी तरह रखती है दुरुस्त

बेहिचक दिखते हैं उसके छिपे हुए अंग

बनते हैं सुंदरियों के इतिहास।" 7

वैश्वीकरण की संस्कृति दिग्भ्रमित करने वाली है। विश्व सुंदरी एक ही लड़की चुनी जाती है और इस कारण अनेक स्त्रियाँ और लडकियाँ भीड़ के रूप में लाइन लगा देती है। मॉडल,अभिनेत्री और सुंदरी बनने की लालसा होने नरक की ओर धकेल देती है। वर्तमान समय में भले ही बाज़ारवादी युग को प्रोत्साहन दिया जा रहा है,परंतु उसमें कोई नैतिक मूल्य नहीं है। पूँजीवादी व्यवस्था स्त्री को फ़ँसाने के लिए 'अर्थ' रूपी चारा डालते हैं जिसमें यह स्त्रियां फँसकर तड़पने लगती है। यहाँ स्त्रियों को उपभोग के रूप में उपयोग करके चौराहे पर फेंक दिया जाता है। स्त्री केवल उपभोक्ता को रिझाने का एकमात्र साधन बन गया है। वह दिखावटी हँसी-हँसकर केवल ब्रांड बेचने का अपना धर्म निभाती है। कवि स्त्री संवेदना एवं मार्मिकता को बयां करते हुए कहता है-

"ब्रह्मांड सुंदरी का ताज पहनकर

तुम बेचते रहो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पाद

घरों के बाज़ार में गुम कर देने और बाज़ारको

घर-घर में पसारने के लिए ही पहनाया जाता है यह ताज

लेकिन मटका भर पानी लाने के लिए व्याकुल तुम्हारी माँ-बहनें

जब देखेंगी टी.वी. पर तुम्हें शीतल पेय का करते हुए प्रचार

तीक्ष्ण धूप में भी सिहर जाएगी उनकी देह

झनझना उठेगा उनका सर्वांग

बाज़ार के चतुर सुजानों के बीच

खूब बड़े-बड़े अनुबंधों के तहत

तुम बाँटती रहो अपनी प्रायोजित हँसी।" 8

बाज़ारवाद ने नारी को अर्थसत्ता प्रदान करके उसका शोषण भी किया है। वह यह दिखाना चाहता है कि हमने स्त्री को सदियों की गुलामी से मुक्त कर दिया है। उसे समाज में पुरुष के बराबर अधिकार दे दिए हैं। घर परिवार की दशा सुधारने में आर्थिक रूप से विशेष योगदान तो स्त्री ने दिया है, परंतु उसने खोया भी बहुत कुछ है। स्त्री बाज़ार का एक खिलौना बन गई है। आज उसे देह दिखाने की बजाय अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाना चाहिए। नीलेश रघुवंशी स्त्री को पुरुष की निगाह से बचाते हुए लिखते हैं-

"मत आया करो तुम सम्मान समारोहों में

तश्तरी शॉल और श्रीफल लेकर

दीप प्रज्वलन के समय

मत खड़ी रहा करो माचिस और दिया बत्ती के संग

मंच पर खड़े होकर मत बाँधा करो अभिनंदन पत्र

उपस्थिति को अपनी सिर्फ़ मोहक और दर्शनीय

मत बनने दिया करो

सुंदरियों

तुम ऐसा करके तो देखो

बदल जाएगी ये दुनिया सारी।" 9

वैश्वीकरण में रचे बसे संयुक्त परिवार की अवधारणा भी अब मिटने लगी है। महँगाई एवं पुरुष की बेकारी ने नारी को बाज़ार में आगे आने के लिए विवश किया है। वह घर की स्थिति को सँवारने के लिए आर्थिक स्वावलंबी बनकर पुरुष का पूर्ण सहयोग कर रही है। इस दौड़ धूप में वह परिवार एवं बच्चों के लिए समय नहीं निकाल पा रही है। वह भौतिकतावाद के बँधनों से बँधकर रह गई है। पुरुष उसे प्रेम के नाम पर केवल ठगना चाहता है। वह चाहता है कि स्त्री बाज़ार में जाकर कमाए भी और उसकी गुलामी भी करती रहे। कवयित्री सविता सिंह की कविता 'मुक्ति के फायदे' स्त्री की विसंगति को दर्शाती है-

"कब चाहिए थी औरतें प्रेम के लिए किसी को

जिनके साथ करना पड़ता था साँझा तन से ज्यादा धन का

अच्छा है मुक्त हो रही है मिल सकेंगी स्वच्छंद भोग के लिए अब

एक समय जैसे मुक्त हुआ श्रम पूँजी के लिए

यह सच है पुरुषों के हमेशा काम आती हैं औरतें

आज भी प्रेम के बहाने उन्हें ले जाया जा सकता है अँधेरों में।" 10

आज के समय मिस्त्री अपनी दोहरी जिम्मेदारी निभा रही है। वह घर में बाहर की जटिलताओं से दो चार होती है, साथ ही पुरुष सत्ता से भी बराबर लोहा लेती है। आज की कविता ने स्त्री के गुणों का चिंतन करते हुए उसे परिवार के लिए आवश्यक माना है। वह ऑफिस गर्ल के अलावा आदर्श पत्नी,माँ,बहू आदि के रूप भी चाहता है। गृह-त्याग की भावना नारी को अकेलेपन, कुंठा से भर रहा है। उसकी आज़ादी अति होने से परिवारवाद एवं सामाजिक मूल्यों का पतन करती है। कात्यायनी के शब्दों में-

"औरत क्या घर के बिना भी हो सकती है

या फिर कोई और भी चौहद्दी हो सकती है

सुखपूर्वक रहने-खाने जीने के लिए

घर के अलावा

घर से अलग होकर

एक लंबा सफर तय किया औरत ने

पागलखाने तक का ।" 11

युगों युगों की सामाजिक निर्मित ने असमानता के बँधनों में जिस स्त्री को जकड़ रखा था, आज वह उन बँधनों को तोड़ती हुई दिखाई देती है। परंतु यह भी सच है कि अलग-अलग देशों में स्त्री की मुक्ति एवं वैश्विक अवधारणा का प्रभाव भी अलग-अलग पड़ा है। भारतीय स्त्री की अवधारणा पाश्चात्य संस्कृति से पूरी तरह प्रभावित था इसमें कोई दो राय नहीं है। यहाँ आधुनिक युग की तीव्र परिवर्तन धारा दिखाई पड़ती है। स्त्री ने भारतीय परिवेश में रहकर भी बड़ी तेजी के साथ अपना सामाजिक एवं धार्मिक विकास किया है। उसमें पुरुष सत्ता पर एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। आज वह पुरुष के ब्रह्म सत्य को अस्वीकार कर उसे चुनौती दे रही है, परंतु इससे पुरुष को बड़ी खुजली होने लगी है-

"मत उठाओ प्रश्न ब्रह्म सत्ता पर

वह पुरुष है

मत तोड़ो इन नियमों को

पुत्री बन पिता का प्यार लो

अंकशायिनी बनो

फिर कोख में धारण करो

पुरुष का अंश

मत रहो नया लोकाचार

मत जाओ प्रश्नों की सीमा से आगे।" 12

निष्कर्षतः हिंदी कविता में वैश्वीकृत स्त्री का बाजारीकरण तो व्यक्त हुआ ही है,साथ ही उसमें अपने अस्तित्व के प्रति नवीन जागरूकता भी देखी जा सकती है। आज उसने पुरुष सत्ता एवं उसके बने-बनाए नियमों को मानने से इनकार कर दिया है। वह आर्थिक एवं सामाजिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए भले ही पूँजीवादी वर्ग की कठपुतली बन गई है,परंतु उसमें परिवारवाद के सभी गुण मौजूद हैं। वैश्वीकरण ने स्त्री को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है ।वह बाज़ारवाद की एक वस्तु बनाकर भले ही अपनी अस्मिता को बनाए रखने में कामयाब नहीं हो पा रही है, लेकिन पुरातन मूल्यों को तिलांजलि देना भी आवश्यक है। इस प्रकार भारतीय स्त्री वैश्वीकरण के दोहरे मानदंडों को जीने के लिए विवश है।

संदर्भ सूची

1.भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र- प्रभा खेतान,सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ. 234

2.खाँटी घरेलू औरत- ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004 पृ. 50

3.पानी का स्वाद - नीलेश रघुवंशी, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 66

4.नगाड़े की तरह बजते शब्द- निर्मला पुतुल,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2005, पृ. 21

5. समकालीन भारतीय साहित्य-अंक 144, जुलाई-अगस्त, 2009, पृ. 97

6.वागर्थ- मार्च 2008, पृ. 99

7.एक जन्म में सब- अनीता वर्मा राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003,पृ. 25

8.बाघ दुहने का कौशल- रमन कुमार सिंह, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,2005 पृ. 104

9. पानी का स्वाद - नीलेश रघुवंशी, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 44

10.नींद थी और रात थी- सविता सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ.54

11.इस पौरुषपूर्ण समय में- कात्यायनी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली,1999, पृ.69

12. सात भाइयों के बीच चंपा- कात्यायनी, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 1994 पृ. 32